

46

॥५०५०५

॥५०५०५५

॥५०५०५५५

॥५०५०५५५५

५०१८/१२ २२/५॥ १८ ५४/३ १२०२/

ॐ

२५५५ ० - २३ - ४० - ०

विजयेश्वर पञ्चाङ्गम्

[मुहूर्तपत्र सहितं]

सप्तर्षिसम्बत्—५०४३। ई० १९६७-६८

ज्योतिर्विदा प्रेमनाथ शास्त्रिणा, श्रीकण्ठ काशीनाथ सहायतः

प्रकाशितं — शुभायास्तु

पुस्तक संख्या १२३४

पुस्तक नाम [...]

पुस्तक मालिक [...]

पुस्तक मालिक का पता [...]

पुस्तक मालिक का नाम [...]

[illegible]

श्रीसुनं वज्र ५००३ ऐतदुक्ति १७ को भीस यहि स्त्रीसुन जुं वक्के मंसु भिग ॥

दिमं शुभ॥

[The page contains dense handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript or ledger. The text is arranged in horizontal lines across the page. There are some marginal notes on the left side.]

७०२ भलवि प्रदामि वदिउ० मीश्वर चकि मीस नैमुके मिगा १ उठय ९ पंक्षु ० मीस प्रदामि सज्जे ॥ स.नं. ७७

१५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

[illegible]

मं० १७ मल्लिकार्जुन
विष्णोः स्तवनि
उ० ३- मं०
मि० २५ यज्ञी
४ मं० १८ मि० २६
मं० १९ उ० ४-
उ० ५- मं० २०
मं० २१ उ० ६-
मं० २२ उ० ७-
मं० २३ उ० ८-
मं० २४ उ० ९-
मं० २५ उ० १०-
मं० २६ उ० ११-
मं० २७ उ० १२-
मं० २८ उ० १३-
मं० २९ उ० १४-
मं० ३० उ० १५-
मं० ३१ उ० १६-
मं० ३२ उ० १७-
मं० ३३ उ० १८-
मं० ३४ उ० १९-
मं० ३५ उ० २०-
मं० ३६ उ० २१-
मं० ३७ उ० २२-
मं० ३८ उ० २३-
मं० ३९ उ० २४-
मं० ४० उ० २५-
मं० ४१ उ० २६-
मं० ४२ उ० २७-
मं० ४३ उ० २८-
मं० ४४ उ० २९-
मं० ४५ उ० ३०-
मं० ४६ उ० ३१-
मं० ४७ उ० ३२-
मं० ४८ उ० ३३-
मं० ४९ उ० ३४-
मं० ५० उ० ३५-
मं० ५१ उ० ३६-
मं० ५२ उ० ३७-
मं० ५३ उ० ३८-
मं० ५४ उ० ३९-
मं० ५५ उ० ४०-
मं० ५६ उ० ४१-
मं० ५७ उ० ४२-
मं० ५८ उ० ४३-
मं० ५९ उ० ४४-
मं० ६० उ० ४५-
मं० ६१ उ० ४६-
मं० ६२ उ० ४७-
मं० ६३ उ० ४८-
मं० ६४ उ० ४९-
मं० ६५ उ० ५०-
मं० ६६ उ० ५१-
मं० ६७ उ० ५२-
मं० ६८ उ० ५३-
मं० ६९ उ० ५४-
मं० ७० उ० ५५-
मं० ७१ उ० ५६-
मं० ७२ उ० ५७-
मं० ७३ उ० ५८-
मं० ७४ उ० ५९-
मं० ७५ उ० ६०-
मं० ७६ उ० ६१-
मं० ७७ उ० ६२-
मं० ७८ उ० ६३-
मं० ७९ उ० ६४-
मं० ८० उ० ६५-
मं० ८१ उ० ६६-
मं० ८२ उ० ६७-
मं० ८३ उ० ६८-
मं० ८४ उ० ६९-
मं० ८५ उ० ७०-
मं० ८६ उ० ७१-
मं० ८७ उ० ७२-
मं० ८८ उ० ७३-
मं० ८९ उ० ७४-
मं० ९० उ० ७५-
मं० ९१ उ० ७६-
मं० ९२ उ० ७७-
मं० ९३ उ० ७८-
मं० ९४ उ० ७९-
मं० ९५ उ० ८०-
मं० ९६ उ० ८१-
मं० ९७ उ० ८२-
मं० ९८ उ० ८३-
मं० ९९ उ० ८४-
मं० १०० उ० ८५-

[illegible]

[illegible]

[The page contains handwritten notes in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side. The text is dense and difficult to decipher due to the cursive style and overlapping lines.]

[illegible]

३०३ सप्तमि ३० कृतसु पंचमि ३० भिखारी (स. जं. ॥) कृतसु पंचमि ३० भिखारी (स. जं. ॥) ३०३ सप्तमि ३० कृतसु पंचमि ३० भिखारी (स. जं. ॥)

१० ०३ १७ ५३ ३० ०९ ३३ ३५ ३७ ४० ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

[illegible]

मं० कचवि १७०९ उभितु संवत् २०३५ मंगल कुंक॥ शुभ तिथि रानीत विराट् नदीस मध्याह्न सङ्क॥ वि० मं० १७

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

933	2 937	3 935	4 935	5 935	6 935	7 935	8 935	9 935	10 935	11 935	12 935	13 935	14 935	15 935	16 935	17 935	18 935	19 935	20 935	21 935	22 935	23 935	24 935	25 935	26 935	27 935	28 935	29 935	30 935	31 935	32 935	33 935	34 935	35 935	36 935	37 935	38 935	39 935	40 935	41 935	42 935	43 935	44 935	45 935	46 935	47 935	48 935	49 935	50 935	51 935	52 935	53 935	54 935	55 935	56 935	57 935	58 935	59 935	60 935	61 935	62 935	63 935	64 935	65 935	66 935	67 935	68 935	69 935	70 935	71 935	72 935	73 935	74 935	75 935	76 935	77 935	78 935	79 935	80 935	81 935	82 935	83 935	84 935	85 935	86 935	87 935	88 935	89 935	90 935	91 935	92 935	93 935	94 935	95 935	96 935	97 935	98 935	99 935	100 935	101 935	102 935	103 935	104 935	105 935	106 935	107 935	108 935	109 935	110 935	111 935	112 935	113 935	114 935	115 935	116 935	117 935	118 935	119 935	120 935	121 935	122 935	123 935	124 935	125 935	126 935	127 935	128 935	129 935	130 935	131 935	132 935	133 935	134 935	135 935	136 935	137 935	138 935	139 935	140 935	141 935	142 935	143 935	144 935	145 935	146 935	147 935	148 935	149 935	150 935	151 935	152 935	153 935	154 935	155 935	156 935	157 935	158 935	159 935	160 935	161 935	162 935	163 935	164 935	165 935	166 935	167 935	168 935	169 935	170 935	171 935	172 935	173 935	174 935	175 935	176 935	177 935	178 935	179 935	180 935	181 935	182 935	183 935	184 935	185 935	186 935	187 935	188 935	189 935	190 935	191 935	192 935	193 935	194 935	195 935	196 935	197 935	198 935	199 935	200 935	201 935	202 935	203 935	204 935	205 935	206 935	207 935	208 935	209 935	210 935	211 935	212 935	213 935	214 935	215 935	216 935	217 935	218 935	219 935	220 935	221 935	222 935	223 935	224 935	225 935	226 935	227 935	228 935	229 935	230 935	231 935	232 935	233 935	234 935	235 935	236 935	237 935	238 935	239 935	240 935	241 935	242 935	243 935	244 935	245 935	246 935	247 935	248 935	249 935	250 935	251 935	252 935	253 935	254 935	255 935	256 935	257 935	258 935	259 935	260 935	261 935	262 935	263 935	264 935	265 935	266 935	267 935	268 935	269 935	270 935	271 935	272 935	273 935	274 935	275 935	276 935	277 935	278 935	279 935	280 935	281 935	282 935	283 935	284 935	285 935	286 935	287 935	288 935	289 935	290 935	291 935	292 935	293 935	294 935	295 935	296 935	297 935	298 935	299 935	300 935	301 935	302 935	303 935	304 935	305 935	306 935	307 935	308 935	309 935	310 935	311 935	312 935	313 935	314 935	315 935	316 935	317 935	318 935	319 935	320 935	321 935	322 935	323 935	324 935	325 935	326 935	327 935	328 935	329 935	330 935	331 935	332 935	333 935	334 935	335 935	336 935	337 935	338 935	339 935	340 935	341 935	342 935	343 935	344 935	345 935	346 935	347 935	348 935	349 935	350 935
-----	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	--------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------

[Faint handwritten text at the bottom of the page]

(The following text is extremely faint and largely illegible due to extreme blurriness. It appears to be a list or ledger with multiple columns of numbers and some handwritten notes.)

[illegible]

ॐ ०३ मज्झिम निक्खयं सुवर्ण कल्लि योस संता कुंके॥ सत्तु विठे व विनी नीसीस मयाग चेषुके॥ वि. सं. ७७

[illegible]

२ सं ०३ वरि प्र ९ मंथवसु पौर्णिमा अम सिंग जेके ॥ सखी सुलेख सवीर अपील दीपक दीप मध्या ॥ वि. सं. ७५

(Faint handwritten text, likely bleed-through from the reverse side of the page)

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

[illegible][illegible][illegible]

श्रीसुठभंवडी ०३ श्रीसुमि० श्रीसंकः ०३१५
करल्लगठायः ५९५ मरुं ३३ भाभगल्लः ५०
मिनगल्लः ०५ ०० मयनंसः १०१९३१५०॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

१. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीराधाय नमः ॥ श्रीनारायणाय नमः ॥ श्रीहनुमान्‌नाथाय नमः ॥ वि. सं. ७१

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

विजयेश्वर-ज्योतिष-कार्यालय

से मिलने वाली पुस्तकें :—

- १ भवानीनामसहस्र, २ सन्ध्योपासन विधि, ३ कर्मकार दीपक [उर्दू]
- ४ पञ्चस्तवी, ५ कापी साईज में विचित्र रंगों में छपी हुई जन्मपत्री ।
- ६ विचित्ररंगों में छपे हुये जन्मपत्री के लम्बे फार्म ।

इदं पंचाङ्गं प्रेमनाथशास्त्रिणा गणितं प्रकाशितं लिखितञ्च शुभायास्तु ।

२७, २८

५७